अभाविप

सदस्यता	–	1635576
इकाई	–	1713 (स्थानो पर कार्य)
सम्पर्क केन्द्र	–	1559
महाविद्यालय शाखा	–	3593
राष्ट्रीय अध्यक्ष	–	प्रा. मिलिंद मराठे (मुम्बई)
राष्ट्रीय महामन्त्री	–	विष्णुदत्त शर्मा (भोपाल)

Website: www.abvp.org
www.vidyapatha.com
www.wosy.com
E-mail : abvpkendra@gmail.com

केन्द्रीय कार्यालय

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

3, मार्बल आर्च, सेनापती बापट मार्ग,माटुंगा रोड (प. रे) स्टेशन के सामने,
माहिम, मुंबई–400 016
दूरभाष : 022–24306321, 24378866, 24373754 फैक्स : 24313938

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

60 वर्ष (1949–2009)

स्वाधीन भारत में छात्र आन्दोलन

एक आन्दोलन देश के लिए

प्रकाशक
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

1

स्वाधीनता के पश्चात् अपने भारत देश की हजारों वर्षों की गौरवशाली एवं वैभवसम्पन्न परंपराओं को ध्यान में रखकर उसे पुनः आधुनिक, विकसित एवं परिस्थितिजन्य दोषों से मुक्त करने का सपना जब सारा देश देख रहा था उस समय कुछ युवाओं ने इन सपनों को साकार करने के लिए देश के माहविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसरों को अपना केंद्र बनाकर गतिविधियाँ प्रारंभ की। इन्हीं गतिविधियों का देशव्यापी खुला मंच 9 जुलाई 1949 को विधिवत स्थापित हुआ । जिसका ही नाम अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) है ।

छात्रों द्वारा छात्रों, देश व समाज के लिए बने इस संगठन को 9 जुलाई 2009 को 60 वर्ष पूरे हो गए हैं । छात्रों द्वारा प्रारंभ यह यात्रा रूकी नहीं । अनंत बाधाएँ जरुर आयी, निरंतर पीढ़ियाँ बदली, परन्तु कार्य निरन्तर छह दशकों से आगे बढ़ता जा रहा है। हर पीढ़ी में संख्यात्मक वृद्धि, विस्तार गतिविधियाँ और विशेषकर देशभक्ति का जज्बा एवं समाज के प्रति आत्मीयता अधिकाधिक उभरती जा रही है तथा संकल्प दृढ़ होता जा रहा है। यह धारा तो आगे बढ़ेगी, अधिक विस्तारित, अधिक तेज तथा और अधिक कल्याणकारी बनती जायेगी। उस धारा को गंगा की भाँति समझना ठीक होगा ताकि पूरा समाज इसके महत्व को पहचाने, तथा यह प्रभावी रूप से बिना कोई रुकावट के प्रवाहित होती रहे यही वर्तमान समय की माँग है।

आज विद्यार्थी परिषद देश का ऐसा युवा संगठन है जिस ने 'वंदेमातरम्' के नारे को प्रत्यक्ष सक्रियता में बदल दिया है। (Vandemataram in action) हजारों छात्र अपनी पढ़ाई के साथ 'भारत माता की जय' को साकार करने में लगे है। जम्मू कश्मीर से केरल व पूर्वोत्तर के मणिपुर या अरुणाचल से गुजरात तक समूचे भारतवर्ष में विद्यार्थी परिषद अपने पैर जमा चुकी है। सुदूर अंदमान-निकोबार, लद्दाख या सिक्किम जैसे हर स्थान पर भी परिषद सक्रिय है।

देश में विभिन्न प्रकार के विचारों से प्रेरित छात्र संगठन काम करते हैं लेकिन दलगत राजनीति एवं विध्वंसक मार्गों को छोड़कर सातत्य से रचनात्मक कार्य करना ही देश व समाज के हित में सार्थक होगा । यही सोचकर हजारों छात्रों ने परिषद् से

जुड़ना पंसद किया । अभाविप ने उन युवाओं की भावना, इच्छा महत्वकाक्षां, आंतरिक शक्ति, क्षमता एवं प्रतिभा को पहचाना एवं समझा है । जिसके कारण ही 60 वर्षों में बनी एक लंबी श्रंखला ने आम छात्रों को परिसर में एक अच्छा माहौल प्रदान किया । इन्हीं कार्यों ने युवाओं के अन्तकरण को अभिभूत करते हुए उन्हें राष्ट्र कार्य की ओर प्रवृत करने की दिशा में प्रेरक का कार्य किया ।

विद्यार्थी परिषद् एक वटवृक्ष के समान है जिसका आधार जमीन पर है । और वह आसमान से बातें कर रहा है । आज संगठन का संवाद केवल शिक्षा क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है अपितु समग्र समाज के साथ उसका संवाद है । अभाविप का कार्य छात्रों तक सीमित है किन्तु उसकी संवेदना पूरे समाज के साथ जुड़ी हुई है । भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्रीमान बालकृष्णन् ने कुछ दिन पूर्व केरल के निजी चैनल के संवाददाता द्वारा उन्हे जनहित याचिकाओं के बारें में पूछा, तो उनका जवाब था कि अधिकतम याचिकाओं में तथ्य एवं अध्ययन का अभाव होता है तथा नकारात्मक रहती हैं, परंतु अभी एक सकारात्मक, अध्ययनपूर्ण एवं पीड़ितों को न्याय देने के उद्देश्य से याचिका आयी है इस में विशेष बात यह है कि यह याचिका एक छात्र संगठन 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्' ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रावासों के सर्वे के आधारपर उन्हे न्याय देने के उद्देश्य से दाखिल की है।

अपने इन्हीं सामाजिक सरोकारों व छात्रहित के कार्यों के कारण युवाओं के बीच अभाविप प्रमाणिकता, आशा एवं विश्वास का प्रतीक बन गई है ।

आज देश आगे बढ़ना चाहता है, सभी क्षेत्र में क्रमांक एक बनना चाहता है। हर युवा उसके लिए प्रयास कर रहा है, देश के लिए छोटी सी उपलब्धि पर भी लोग खुशी मनाना चाहते हैं । चाहे वह कल्पना चावला का अकाशयान में सहभाग हो या भारत की मिसाईल क्षेत्र की प्रगति हो। इस लिए डॉ. एपीजे कलाम जैसा वैज्ञानिक ऐसी इच्छाओं की पूर्ती करने वाला प्रतीक बन कर, प्रेरणास्पद आदर्श बन कर उभर आता है। अ.भा.वि.प. ऐसा सपना देखने के लिए प्रेरित करती है, सहायक बनती है।

अब बदली दुनिया में भारत के युवा काफी कुछ कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होना यह एक स्वाभाविक इच्छा सभी के मन में है। दुनिया की सभी सुविधा भारत में हों, मेरे जीवन में भी वह आए यह विचार भी प्रबल है। यह विचार भी जरुरी

समझा जा रहा है कि हमारी पहचान क्या है? क्या हम एक गरीब, पिछड़े देश के लोग हैं या भविष्य के सबसे सम्पन्न एवं प्रभावशाली देश के लोग हैं। दूसरों की कृपा पर जीने वाले देश के लोग हैं या स्वयंसिद्ध देश के लोग हैं। अपनी बुद्धि से व्यक्तिगत कुछ पाकर दूसरे देश का विकास करने वाले लोग हैं या स्वयं कष्ट सहकर अपने देश को विकसित करने वाले हैं। ऐसे कई प्रश्न हमारे नौजवानों के मन में आते हैं। हमारे देश के रीति रिवाज, परंपराएँ भी काफी शालीन हैं जो दुनिया के लिए भी अनुकरणीय हैं। क्या हमारे लिए आधुनिक समय में इनके साथ चलना संभव है? या आधुनिक समय में यही हमारे लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

अभाविप की स्थापना करने वालों ने भी सोचा था कि भारत के नौजवानों ने आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। अब उन्हें देश को आगे बढ़ाने में रचनात्मक भूमिका भी निभानी है। कई नई अच्छी परंपराएँ भी स्थापित करनी होगीं। भारत को भारत रहना है तो अपने तरीके ढूँढने होंगे। अपने स्वभाव व स्वधर्म (अपने कर्तव्य) के अनुरुप भविष्य की गतिविधियाँ निश्चित करनी होंगी। और यह प्रयास कोई सरकार या किसी एक संगठन के करने से पर्याप्त नहीं होगा, सभी को शामिल होना होगा।

कोई देश तभी विकास की तरफ बढ़ पाता है, जब उसकी युवा शक्ति सक्रिय होती है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अपनी पुस्तक lgnited Mind (तेजस्वी मन)में लिखते हैं, "What is it that we are missing ? What is it that needs to be corrected ? These seem to be an attitude problem as if we cannot shake ourselves out of a mindset of limited achievement" (कौनसी बातें हैं जो हमसे छूट रही हैं? कौनसी बात है जो ठीक करना जरुरी है? समस्या हमारी सोच में है? हम स्वयं के स्वार्थ की पूर्ती में ही धन्यता मानने की प्रवृत्ति से निकल नहीं पाते)

व्यक्तिगत जीवन में संयमित साधनों से संतुष्टि सराहनीय है लेकिन देश व समाज को तो आगे बढ़ना ही चाहिए परंतु कई बार होता विपरीत है हम देश के बारे में तो ज्यादा सोचते नहीं लेकिन व्यक्तिगत साधन जुटाने में पूरी शक्ति लगा देते हैं। परिषद् की सोच है कि हम सभी देश के विकास में अपनी थोड़ी-थोडी शक्ति भी लगा देंगे तो, देश तेज गति से आगे बढ़ेगा तथा हर प्रकार के लोगों को भी खुशहाली मिलेगी।

हमें खुशी से जीना है तो देश की व्यवस्थाएँ ठीक रखनी होगी । अगर हम साक्षरता की भी समस्या को देखते हैं, तो यह निरक्षरता कितने करोड़ लोगों के जीवन को दुर्बल व परावलंबी कर देती है। उनके जीवन को कितना संकटमय बना देती है। जिस देश में करोड़ों लोग ऐसे हों उसे हम कैसे विकसित कर सकते हैं? सरकार तंत्र पर निर्भर रहकर क्या कभी यह समस्या हल होगी? संभव नहीं लगता क्योंकि शासन पर ऐसी जनता दबाव ही नहीं बना पाती जो या तो अनपढ़ हो या अनपढ़ों के प्रति उदासीन हो।

हमारे देश का युवा अगर संकल्प लेकर प्राथमिकता से इसके समाधान में जुट जाए, तो सरकारी तंत्र भी सक्रिय होकर कार्य करना प्रारंभ कर देगा।

देश में बहुत सारे मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल खुलने जा रहे हैं। लेकिन हमारे अच्छे-अच्छे डॉक्टर मिलकर भी स्वास्थ्य व्यवस्था एवं स्वास्थ्य के स्तर को उपर उठाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। अब यह जरुरी हो जाता है कि ऐसे प्रेरित डॉक्टर समाज को चाहिए जो इस दिशा में कुछ कार्य करें। तभी देश विकसित होगा।

ऐसे कई प्रकार से जितना हम सोचते हैं, तो एक बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसरों में ऐसा वातावरण उत्पन्न होना जरुरी है कि हमारे छात्र, परिसरों में एवं बाहर निकलने के पश्चात देशभक्ति एवं समाज के प्रति आत्मीयता से ओतप्रोत होकर अपने क्षेत्र में कार्यरत रहें तथा उस क्षेत्र का नेतृत्व करें।

विद्यार्थी परिषद् राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के उद्देश्य से प्रारंभ हुई। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण क्या है? हमारे देश में हर व्यक्ति को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा एंव चिकित्सा जैसी प्राथमिक सुविधाएँ प्राप्त हों साथ में सामाजिक सम्मान तथा आगे बढ़ने का समान मौका भी मिल सके ऐसा माहौल रहे। व्यवस्थाएँ ऐसी हों जिसमें सभी को न्याय मिले। यह देश वैभवशाली बनने के साथ ही रक्षा की दृष्टि से सम्पन्न बने। समाज में सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की रक्षा हो। ऐसे परस्पर स्नेहपूर्ण एवं पूरक भाव रखनेवाला समाज जो विश्वबंधुत्व का भाव रखता हो व साथ में अपनी मातृभूमि हेतु जीने- मरने लिए लालायित हो इस राष्ट्र के लिए आवश्यक है। यह राष्ट्र तो पुराना है लेकिन पूर्वजों के अमूल्य ज्ञान की रक्षा करते हुए

हमें आधुनिक एवं संपन्न बनना है सामाजिक कुप्रथाएँ एवं गलत परंपराओं से आनेवाली पीढ़ी को मुक्त रखने का समाज संकल्प ले ऐसा वातावरण अपेक्षित है।

इसी दिशा में कुछ प्रयास, अ.भा.विद्यार्थी परिषद् ने चलाए है। परिषद् के कार्य को समझना है तो उसके गत छह दशक का लेखाजोखा देखना पड़ेगा। परिषद् ने अपने स्थापना काल से ही एक दायित्ववान् छात्र संगठन के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। जैसी देश व समाज की आवश्यकता हो, वैसे परिषद् के कार्यकर्ता कार्य में जुटे रहे। साथ ही हजारों छात्रों का समय-समय पर जागरण किया व उन्हें भी ऐसे कार्य में सहभागी होने का अवसर प्रदान किया।

2

यह किसी भी संस्था के लिए अत्यंत खुशी का प्रसंग है कि वह अपने 60 वर्ष पूर्ण कर रही है। वे हजारों छात्र भाग्यशाली हैं जिन्हें स्वाधीन भारत में देश के लिए कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। कई संगठन आये और बिखर गये विवादास्पद हुए या दिशाहीन हो गये परन्तु विद्यार्थी परिषद सातत्य से गत 60 वर्षों में अपने कार्य में निष्ठापूर्वक लगी है। परिषद् में भी कई पीढ़ियाँ बदल गयीं, लेकिन उसी उत्साह एवं निष्ठा से हर पीढ़ी के छात्र कार्य करते रहे हैं। इसी का परिणाम है कि बीते वर्षों में संगठन का विस्तार भी हुआ तथा प्रभाव एवं विश्वसनीयता में सतत् वृद्धि गत 60 वर्षों में होती रही। आज परिषद् के कार्यकर्ता वे वर्तमान हों या पूर्व सभी इस संगठन पर गर्व कर सकते हैं तथा आज भी संगठन उनके लिये प्रेरणास्पद है। विद्यार्थीयों के लिए कई निराशाओं के बीच विद्यार्थी परिषद् जैसा नौजवानों का संगठन आशा एवं विश्वास का कारण बना है। यही कारण है कि लगातार देश के प्रत्येक कोने में छात्रों ने परिषद् कार्य को भारी प्रतिसाद दिया, उसमें सहभागी हुए, समर्थक बने तथा समाज भी लगातार तन,मन,धन से ऐसे कार्य का खुलकर सहयोग कर रहा है परिणाम स्वरुप विद्यार्थी परिषद् का कार्य देश के हर हिस्से में पहुचा है एंव प्रभावी होता जा रहा है।

परिषद् का कार्य किसी लहर, राजनैतिक सत्ता, धनबल, बाहुबल, आर्कषक नारे एवं घोषणा या झूठे प्रचारों के आधार पर नहीं बढ़ा है। अपितु हजारों कार्यकर्ताओं के परिश्रम, निष्ठा, कष्ट एवं कर्तृत्व तथा बलिदान के आधार पर बढ़ता गया है। इसलिये 60 वर्ष पूर्ति पर हमें उन्हें याद करना बहुत जरुरी है, जिन्होंने भारत माता की जय वंदेमातरम् के नारों को साकार करने में अपने श्रम, धन तथा आवश्यकता पढ़ने पर प्राण भी न्यौछावर कर दिये। यह स्मरण अत्यंत आवश्यक है कि ऐसे लोगों की नींव पर खड़ा होने से ही यह संगठन मजबूत एवं विश्वसनीय बना है। देश व समाज पर जब भी किसी भी प्रकार की विपत्ति आयी तो परिषद् के कार्यकर्ता सीना तानकर खड़े हुए व सभी प्रकार से परिस्थिति से डटकर मुकाबला किया।

संघर्षरत

आंध्रप्रदेश के विश्वविद्यालयों में 1982 के आसपास नक्सलियों का बोलबाला था वे छात्रों को गरीबों के उत्थान की दुहाई देकर हिंसक गतिविधियों के लिये प्रेरित करते थे। देश की संस्कृति एवं गौरव से तोड़कर छात्रों को देश के विरोध में खड़ा करने का कार्य कर रहे थे। प्रजातंत्र का अपमान करते थे। काकतिया विश्वविद्यालय (वारांगल) जिसे वह कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय कहते थे, में हर वर्ष स्वाधीनता या गणतंत्र दिवस जैसे मौके पर नक्सली धमकी देकर तिरंगा लगाने से मना करते थे एवं काला झण्डा लगाते थे। लेकिन डर के कारण सभी चुप रहते थे। 26जनवरी 1982 को उन्होंने जब तिरंगा लगाने से मना किया तो परिषद् कार्यकर्ताओं से रहा नहीं गया। एस.जगन मोहन रेड्डी व उसके साथियों ने इस बात का विरोध किया। गणतंत्र दिवस पर 15-20 अ.भा.वि.प. कार्यकर्ताओं के आग्रह पर विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों ने तिरंगा फहराया। नक्सलियों ने आकर मारपीट की, ध्वज फाड़ा तथा काला झंडा चढ़ा दिया। परंतु उनकी धमकियों के बावजूद जगन रेड्डी ने पुनः तिरंगा चढ़ाया व पुलिस स्टेशन में संबंधित घटना को लेकर आपत्ति दर्ज करवायी। जब मामला न्यायालय में पहुचकर गंभीर बन गया, न्यायालय के लिये जाते समय रास्ते में उसकी नक्सलियों द्वारा निर्दयता पूर्वक हत्या कर दी गयी।

ऐसी घटनाओं से भयभीत होने के स्थान पर कार्यकर्ता अधिक संकल्पवद्ध होकर पुनः कार्य में जुट गये। ऐसी कई घटनाओं का क्रम चलता रहा। परिषद सहित संघ विचार के 45 से ज्यादा कार्यकर्ता शहीद हुए लेकिन दो दशक से लम्बे संघर्ष के परिणामस्वरूप छात्रों ने हिंसक नक्सलवाद को नकार दिया व आज आंध्र के परिसरों में 'भारतमाता की जय' के नारे व 'वंदेमातरम्' की ललकार गूंजती हैं। ''लाल गुलामी छोड़कर बोलो वंदेमातरम्'' के नारे को छात्रों ने व्यापक समर्थन दिया। आज आंध्रप्रदेश में तीन लाख से अधिक छात्र विद्यार्थी परिषद के सदस्य है जो परिषद के राष्ट्रवादी विचार के बढ़ते हुए प्रभाव का प्रमाण है।

छात्रशक्ति की पहचान

देश जब 1947 में स्वीधान हुआ तो छात्रों के समूह के संदर्भ में कई धारणाऐं

थीं। किसी ने कहा कि छात्र अराजकता फैलाते हैं तथा छात्र शक्ति यह उपद्रवी शक्ति है, (Student power - Nuisance power), किसी ने कहा विद्यार्थी राजनेताओं के आगे पीछे जिंदाबाद करने वाली फौज (Voluntary power) है। उसी के आधार पर राजनैतिक दलों की शाखा के रुप में कई छात्र संगठन भी खड़े किये गये थे। एक तरफ वामपंथियों का हिंसक क्रांति का भ्रम भी छात्रों को प्रभावित कर रहा था तथा दूसरी तरफ पश्चिम की चकाचौंध, केवल अपने स्वार्थ पर (Extreme carriesist Approach) चलने के लिये प्रभावित करती थी। उस समय विद्यार्थी परिषद ने समूचे विद्यार्थी समुदाय को संगठित होने का सार्थक मार्ग प्रशस्त किया। परिषद् ने कहा कि अगर छात्रों को सही दिशा दर्शन दिया जाये तथा उन्हें कुछ करने का अवसर प्रदान किया जाये, तो यही छात्रशक्ति संगठित होकर देश के पुनर्निर्माण के लिये कटिबद्ध होकर कार्य करेगी। परिषद् ने छात्रशक्ति को उपद्रवी (Nuisannce)के स्थान पर राष्ट्रशक्ति (Nation power) कहा। छात्र शक्ति-राष्ट्रशक्ति Student power - Nation's power। विद्यार्थी परिषद ने अपनी स्थापना से ही समूचे विद्यार्थी समुदाय को सार्थक पहचान प्रदान की तथा स्वाधीन देश में उसके उत्थान हेतु कार्यरत रहने का उद्देश्य (Mission) दिया।

इन्हीं उद्देश्यों के अनुरूप अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने 1948में अपना कार्य प्रारंभ कर दिया, जो बाद में 9 जुलाई 1949 को विधिवत पंजीबद्ध छात्र संगठन बना। परिषद् की स्पष्ट धारणा थी कि छात्रों के सामने देश सर्वोपरि हो एवं उनके सारे क्रियाकलाप देश के हितार्थ ही चलाएं जाएं। यही कारण था कि बीते 60 वर्षों में विद्यार्थी परिषद् के कार्यक्रम, आंदोलन, मांगे, रचनात्मक गतिविधियाँ सब कुछ इसी दिशा में था। परिषद् ने यह धारणा रखी कि भारत को पुनः ऊपर उठाना है तो वह दूसरों के भरोसे नहीं, अपने देशवासियों के परिश्रम, त्याग एवं बलिदान से ही उपर उठेगा, जिसमें नौजवानों का योगदान महत्वपूर्ण रहेगा तथा यह तभी संभव है जब हर भारतवासी को भारत पर गौरव रहेगा इस हेतु देश को इस दिशा में ले जाने वाली हर बात को स्थापित करना पड़ेगा।

देश से अंग्रेज चले गये, लेकिन अंग्रेजियत अर्थात वह गुलामी की मानसिकता हटाकर आत्मविश्वास जागृत करना होगा।

स्थापना काल

परिषद् की स्थापना के समय ही देश के संविधान निर्माण का कार्य चल रहा था। परिषद् का प्रथम माँग पत्र था देश का नाम भारत हो (INDIA की बात हो रही थी), देश पर मर मिटने की प्रेरणा देनेवाले वंदेमातरम् को राष्ट्रगीत माना जाए तथा सभी भारतीय भाषाओं को राष्ट्रभाषा मानकर हिंदी को सम्पर्क भाषा बनाया जाए (अंग्रेजी की बात चल रही थी)। परन्तु उस समय कई प्रकार की बातें हमारे नेताओं एवं प्रबुद्ध वर्ग को प्रभावित कर रही थीं। परिणाम स्वरुप समझौतावादी नीतियां प्रभावी हुई एवं देश की दिशा ठीक नहीं बन पाई। परिषद् का कार्य तो निरन्तर हर परिस्थिति के लिये आवश्यक था लेकिन ऐसी समझोतावादी नीतियों के चलते आने वाली पीढ़ियों के लिये और भी जरुरी हो गया।

प्रारंभिक काल

आजादी के पश्चात भी छात्र आंदोलन स्थान-स्थान पर हो रहे थे। स्वाधीन भारत में सभी को नि:शुल्क या सस्ती शिक्षा देने की घोषणाओं के विपरीत शिक्षा शुल्क को दोगुना कर दिया गया। विरोध में आंदोलनरत छात्रों पर ब्रिटिशों के जमाने की तरह बर्बरता से लाठीयाँ बरसायी गयी। विभिन्न स्थानों पर छात्रों की माँगों पर सकारात्मक विचार करने की जगह पुलिस द्वारा छात्रों को दबाने का ही प्रयास हुआ । देश के काफी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शैक्षिक व्यवस्थाओं में सुधार की मांग को लेकर छात्रों के आंदोलन चलते रहे ।

विद्यार्थी परिषद् का यह प्रारंभिक काल था तथा कार्य का धीरे-धीरे विस्तार हो रहा था। लेकिन शिक्षा परिसरों में बढ़ती अव्यवस्था एवं उसकी शून्यता के बोध से काफी असंतोष फैला था जिसे समाज भी अनुभव कर रहा था। छात्रों के आंदोलन पर परिसरों में घुसकर पुलिस अत्याचार करती थी। इसके विरोध में भी आक्रोश पर्याप्त था। परिणामस्वरूप 1966में उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, बिहार, पंजाब, कोलकाता, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र जैसे विभिन्न प्रांतों में आंदोलन तीव्र हो गया। दिल्ली से प्रारंभ आंदोलन देशभर में फैला व उसने काफी हिंसक स्वरूप धारण कर लिया। मध्यप्रदेश में गोलीयाँ चली, कर्फ्यू लगा तो कहीं दूसरे प्रांतों में प्रदर्शन, पथराव एवं

लाठीचार्ज व गोलीबारी हो रही थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री, गृहमंत्री को भी हस्तक्षेप करना पड़ा।

आंदोलन तो दिसम्बर 1966तक शान्त हुआ परंतु सड़क से लेकर कई मंचों पर ''शिक्षा तथा छात्र एवं उनकी भूमिका'' आदि विषयों पर गंभीर बहस प्रारंभ हो गयी। विद्यार्थी परिषद ने भी इस चर्चा को सार्थक दिशा में ले जाने का गंभीर प्रयास प्रारंभ कर दिया। लगातार बढ़ते असंतोष को देखकर शिक्षा में सुधार हेतु तत्कालीन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. कोठारी के नेतृत्व में ही एक आयोग केंद्र सरकार ने बनाया। 1968में शिक्षा के संदर्भ में सरकार ने अपनी नीतियों की विधिवत घोषणा भी की।

यही समय था जब विद्यार्थी परिषद 1960-70 के दशक में स्वयं तीव्रगति से विस्तारित हो रहा था। जैसे-जैसे कार्य बढ़ रहा था परिषद् छात्रों को समाज जीवन में सार्थक एवं प्रभावी भूमिका को आकार देने का अनवरत प्रयत्न कर रही थी। उस समय के छात्र आंदोलनों की हिंसा एवं अराजकता को देख कर कई लोग छात्रों को एक उपद्रवी शक्ति के रूप में देख रहे थे। यही समय था जब परिषद ने छात्रसमुदाय के वास्तविक परिचय की अपनी परिभाषा को अपने 20-22 वर्षों के अनुभव के आधार पर प्रसारित करना प्रारंभ कर दिया।

उस समय दो प्रमुख बातें थी एक तो छात्रों के ऐसे आंदोलन को खड़े करना जो संगठित एवं सकारात्मक होंगे तथा हिंसा मुक्त होंगे। दूसरी बात छात्रशक्ति की समाज के सामने ठीक पहचान प्रस्तुत करना।

विद्यार्थी परिषद् ने 1971 के अधिवेशन में अपनी भूमिका को स्पष्ट किया कि छात्र कल का नहीं अपितु आज का नागरिक है। वह केवल शैक्षिक जगत् का घटक नहीं अपितु एक सामान्य नागरिक के नाते आज का नागरिक है। परिषद् ने सभी को आह्वान किया कि छात्रशक्ति को उपद्रवी शक्ति न माने अपितु यह राष्ट्रशक्ति है। साथ ही छात्रों की आवाज को दबाने की जगह उसे सम्मानपूर्वक स्थान देने की आवश्यकता है।

विद्यार्थी परिषद ने महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में छात्रसंघों के साथ ही

उनके प्रशासन में भी छात्रों की सहभागी भूमिका की आवश्यकता पर जोर दिया।

एक तरफ विद्यार्थी परिषद् अपने सैद्धांतिक पक्ष को प्रचारित कर रही थी, तो दूसरी तरफ स्थान-स्थान पर आवश्यक संघर्ष हेतु छात्र आंदोलनों को नये स्वरूप में प्रस्तुत कर रही थी। 1960-70 के दशक का उत्तरार्ध आते-आते भारत स्वाधीनता के बीस वर्ष पूर्ण कर चुका था। तीन पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हो चुकी थीं। शैक्षिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्रों में वैसी प्रगति नहीं हुई जिसकी अपेक्षा की गई थी। भारत में कई प्रकार के असंतोष व्याप्त थे जिनसे विद्यार्थी भी प्रभावित हुए। दूसरी तरफ सत्ता में बैठी श्रीमती इंदिरा गाँधी तथा उनकी कांग्रेस भी छात्र आंदोलनों को दबाना चाहती थी। लेकिन अब परिषद के नेतृत्व के कारण संगठित रूप से अनुशासित छात्र आंदोलन स्थान-स्थान पर हो रहे थे, जिन्हें दमन से दबाने का मौका भी सरकार ढूँढ़ नहीं पा रही थी। पहले से ही परेशान जनता का भी समर्थन ऐसे आंदोलन को प्राप्त हो रहा था। शायद छात्रों को जल्दी ही एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। जिसके लिए अ.भा.वि.प को भरोसेमंद मानकर छात्र बड़ी संख्या में उसके साथ जुड़ रहे थे। परिषद् ने अपना पहला शैक्षिक माँगपत्र 1970 में दिया, जिसपर लाखों छात्रों ने हस्ताक्षर किये। दिल्ली में मा. उपराष्ट्रपति को यह ज्ञापन हजारों छात्रों की रैली के माध्यम से सौंपा गया।

छात्र आंदोलन और लोकतंत्र की रक्षा

गुजरात में अहमदाबाद के एल.डी. इंजीनियरिंग कॉलेज में (20 दिसंबर 1973) एवं मोरवी के पोलिटेक्निक कॉलेज (28दिसम्बर 1973) के मैस (भोजनालय) की समस्या को लेकर छात्र आंदोलित हुए अभाविप का नेतृत्व मिलते ही आंदोलन बढ़ता गया। आंदोलन की व्यापकता को देखते हुए नवनिर्माण युवक समिति का गठन हुआ। आम छात्रों ने गुजरात की चिमणभाई सरकार को निशाना बनाया, जिसे अंत में जाना पड़ा परंतु आंदोलन काफी प्रभावी बन चुका था। विद्यार्थी परिषद की संगठित शक्ति ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। यह भी कह सकते है कि आंदोलन की रीढ़ बनकर परिषद् ने कार्य किया था।

स्वाभाविक इस सफलता का प्रभाव केंद्र की सत्ता में बैठी कांग्रेस के साथ-साथ देशभर के छात्र व व्यापक अर्थ में समूचे जनमानस पर हुआ। यह वह समय था

जब अभाविप कई प्रांतों में एक प्रभावी संगठन बन चुका था। तथा कई छात्रसंघों में उसके कार्यकर्ता पदाधिकारी निर्वाचित होकर छात्रों के नेता के रूप में स्थापित हो चुके थे। वामपंथी संगठनों की गुजरात में छात्र आंदोलन विरोधी भूमिका ने उनकी छात्रशाखाओं को भी काफी कमजोर किया था। यही कारण था कि अब परिषद् के नेतृत्व में समूचा छात्र समुदाय व्यापक त्रासदी के खिलाफ आंदोलन के लिए लालायित था तो दूसरी तरफ श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्ववाली सरकार छात्र आंदोलन के रुप में उभर रहे जनआक्रोश को दबाने की तैयारी कर रही थी।

''गुजरात की जीत हमारी है, अब बिहार की बारी है'' नारे के साथ परिषद के कार्यकर्ताओं ने बिहार में भी आंदोलन प्रारंभ किया। छात्रों में भी परिवर्तन की चाह थी आंदोलन काफी व्यापक बना एवं धीरे-धीरे देश भर में फैल गया देशव्यापी छात्र आंदोलन को अपने लिए चुनौती मानकर श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसे कुचलना प्रारंभ किया जिसके कारण यह आंदोलन और भी भड़क गया व सारी जनता को अपनी समस्याओं का समाधान इस छात्र आंदोलन में दिखने लगा। इन सब घटनाओं को देखते हुए अभाविप कार्यकर्ताओं ने 19 मार्च 1974 को आंदोलन का नेतृत्व करने की श्री जयप्रकाश नारायण से प्रार्थना की।

बाद में उनके नेतृत्व के कारण वह जेपी आंदोलन कहलाया। इस आंदोलन की विशेषता यह थी कि आंदोलन की बागडोर परिषद् नेताओं के हाथ में थी, जिनका आधार विद्यार्थी परिषद् का मजबूत संगठन था। स्वाभाविक इस कारण आंदोलन की विश्वसनीयता, मजबूती, व्यापकता तथा अनुशासन निरंतर बना रहा।

विधान सभा घेराव, बन्द, प्रदर्शन, जनता कर्फ्यू, सरकार ठप्प करो' अभियान, आदि के माध्यम से 15 माह चला सम्पूर्णक्रांति का यह आंदोलन 26जून 1975 को श्रीमति इंदिरा गांधी द्वारा देश में अकस्मात आपातकाल घोषित करते ही 'लोकतंत्र रक्षा अभियान' में बदल गया। श्रीमति गांधी ने देश में आपातकाल लगाकर सभी बड़े नेताओं को जेल में बंद करना प्रारंभ किया, तो आंदोलन की बागडोर अभाविप ने संभाल ली। जगह-जगह छात्र संघ पदाधिकारी एवं विभिन्न छात्र संगठनों को लेकर संयुक्त समितियाँ बनायी गयीं। परिषद की आंदोलन को प्रारंभ करने से लेकर उसे परिणाम तक ले जाने तक पूरे आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। परिषद् के 4500

कार्यकर्ता कारावास में गए। अंततः आपातकाल हटाना पड़ा व लोकसभा चुनाव घोषित हुए सभी दलों ने मिलकर जनता पार्टी गठित की और संयुक्त चुनाव लड़ने का फैसला किया व विजयी भी हुए।

विद्यार्थी परिषद ने लोकतंत्र की रक्षा हेतु अपनी पूरी शक्ति के साथ संघर्ष किया तथा अपनी ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया। चुनाव के पश्चात जहाँ सभी छात्र संगठन जनता पार्टी के साथ विलीन होकर या अलग से सरकार में सहभागी हुए वहीं विद्यार्थी परिषद् ने अपनी दलगत राजनीति से उपर उठकर चलने की भूमिका के अनुसार राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में रचनात्मक रूप से लगे रहने का निर्णय लिया।

शिक्षा परिवर्तन हेतु प्रयास

छात्रो का संगठन होने के नाते से शैक्षिक परिसरों में सुधार से लेकर समूची शिक्षा को देशानुकूल तथा युगानुकूल बनाने हेतु सतत् प्रयासरत रहना यह अभाविप ने हमेशा अपना स्वाभाविक कार्य माना है। गत 60 वर्ष इस मोर्चे पर परिषद सतत् कार्यरत रही तथा गलत बातों को रोकने एवं सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु परिषद् ने एक महत्वपूर्ण भूमिका का निश्चितरूप से निर्वाह किया है। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों की समस्याओं पर सक्रीयता यह अब परिषद के हजारों इकाईयों की गतिविधि का नित्य का क्रम बना है।

लेकिन साथ ही परिषद ने दो स्तर पर शिक्षा क्षेत्र में काम किया है। एक शिक्षाविद, शिक्षक व छात्र मिलकर शिक्षा परिवर्तन की कल्पना के अनुरूप शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन हेतु हमेशा अपेक्षित परिवर्तनों पर सहमति बनाने के लिए पहल की। वहीं दूसरी तरफ परिषद ने अपने द्वारा आयोजित विभिन्न चर्चा सत्रों व अन्य संस्थाओं के मंचों पर सहभागी होकर शैक्षिक परिवर्तन की पहल को गति प्रदान की।

परिषद के विचार से ''भारत को एक ऐसी आधुनिक शिक्षा चाहिए जो नये से नये सभी जानकारियों तथा आविष्कारों का स्वागत करती हो। साथ ही उनकी मूलभूत ज्ञान के आधार पर कसौटी करते हुए निष्कर्ष निकालने का विवेक भी प्रदान करती हो। भारत की गौरवपूर्ण ज्ञान एवं शौर्य परंपराओं से परिचित कराती हो तथा वर्तमान के अपने समाज के अंतिम व्यक्ति के दुखदर्द से जोड़ती हो। सभी शाखाओं

को महत्पूर्ण मानकर उसमें सर्वाधिक कुशलता प्रदान करती हो, लेकिन साथ में उसका दुरूपयोग टालकर जनकल्याण हेतु उसे सदुपयोग में लाने योग्य बनाने वाली जीवनमूल्यों की शिक्षा भी प्रदान करती हो।''

परिषद ने शिक्षा परिवर्तन हेतु समाज व सरकार दोनों की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। शिक्षा की विषय वस्तु व उसके स्वरूप के बारे में शिक्षाविद, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा विभिन्न क्षेत्रों के जानकार मिलकर तय करें, तो दूसरी तरफ शिक्षा की उचित एवं पर्याप्त व्यवस्था बनाना सरकारों की जिम्मेदारी है। ऐसी व्यवस्था बनाने में समाज का भी सहयोग रहे ।

शिक्षा में भ्रष्टाचार पर अंकुश रखने का काम छात्रशक्ति का है ऐसी परिषद् की मान्यता है। उसके अनुरूप हिम्मत से सत्ता के ऊंचे स्थानों पर बैठे हुए भ्रष्टाचारियों के खिलाफ भी सतत संघर्ष का मोर्चा जारी रखा।

ऐसे ही देश के हर विश्वविद्यालय प्रशासन पर परिषद् के माध्यम से छात्रों ने दबाव बनाया है। साथ ही परिषद् ने विश्वविद्यालय के प्रशासन तथा पाठ्यक्रम में सुधार एवं उसे कालानुरुप बनाने हेतु सकारात्मक पहल भी स्थान-स्थान पर की है।

विद्यार्थी परिषद ने हमेशा एक आम छात्र की समस्याओं के लिए संघर्ष किया है। जिन समस्याओं का समाधान महाविद्यालय, विश्वविद्यालय प्रशासन को करना चाहिए था ।जैसे –

- प्रवेश, शुल्क, परीक्षा और परिणाम की समस्याएं ।
- पीने का पानी, पुस्तकालय, पार्किंग, क्लासरूम, शिक्षकों की कमी ।
- परिवहन के साधनों की उचित व्यवस्था ।
- रेगिंग व छात्राओं से छेड़छाड़ की समस्या ।
- छात्रवृति समय पर और आसानी से मिले ।
- अनुसुचित जाति एवं जनजाति छात्रों की समस्याएं ।
- छात्रावासों की समस्याएं ।

इस प्रकार की कई छात्रों की समस्याओं को लेकर परिषद द्वारा प्रशासन से संवाद के माध्यम से समाधान का प्रयास होता है । कभी आवश्यकता पड़ने पर संघर्ष भी करना पड़ता है । आज स्थिति यह है कि विद्यार्थी परिषद के द्वारा उठाये गए मुद्दो पर गंभीरता से विचार होता है "Vidyarthi Parishad is a Voice which cannot be ignored" यह परिसरों में परिषद के कार्य का प्रभाव है ।

शिक्षा के निजीकरण की हवा 20 वर्षों से अपने यहां पर भी चल पड़ी है, परिषद् जैसा मजबूत संगठन न होता तो सरकार अपनी जिम्मेदारी टालकर उच्च शिक्षा को पूरी तरह बाजार के हवाले कर देती। आज अगर सरकारी एवं अनुदानित महाविद्यालय, चल रहे हैं तो यह परिषद के आंदोलन का ही परिणाम है। छत्तीसगढ़ के 100 से अधिक अनियमित विश्वविद्यालयों को बंद करना हो, या दक्षिण से उत्तर तक शिक्षा को भ्रष्टाचार एवं व्यापारीकरण पर अंकुश रखने का सतत प्रयास हो, ऐसी कई उपलब्धियाँ हैं। कई प्रांतों में परिषद के आंदोलन व न्यायालय में कानूनी लड़ाई के माध्यम से छात्रों को राहत मिले इसका प्रयास हो रहा है। लड़ाई काफी लंबी है, परंतु देशव्यापी, मजबूत एवं समर्पित संगठन होने के नाते परिषद् प्रामाणिकता से सामान्य गरीब एवं पिछड़े वर्ग के छात्रों के लिए अवसर बनाये रखने के प्रयास में जुटी है। यही कारण है परिषद् ने जहाँ एक तरफ निजीकरण का समर्थन इसलिए किया है कि सरकार के अतिरिक्त समाज के द्वारा स्वयंसेवी प्रयास (Private Participation) जरुरी हैं। लेकिन साथ ही परिषद ने व्यापारीकरण को रोकने में सरकार की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है, जिससे हमारे देश के सामान्य छात्रों को आगे बढ़ने के अवसर बने रहेंगे। परिषद् ने इन्हीं उद्देश्यों के अनुरुप केंद्रीय कानून की आवश्यकता को सभी राजनैतिक दलों एवं समाज के समक्ष रखा है। परिणामस्वरूप सभी तत्वत: इसे मानने लगे हैं। जल्द ही संघर्ष को तीव्र करते हुए इसे लागू कराने का संकल्प भी परिषद् का है।

परिषद ने हमेशा छात्रावास, छात्राओं के लिए विशेष कक्ष की व्यवस्था (Common Room), शिक्षक पढ़ाये-छात्र पढ़े, पाठ्येत्तर गतिविधियों की आवश्यकता, भ्रष्टाचार मुक्त परिसर, असामाजिक तत्वों से मुक्त परिसर जैसे कई

विषयों पर लगातार प्रयास जारी रखे, जिसके कारण हजारों छात्र अपने परिसरों के प्रति जागृत हुए हैं, एवं प्रशासन पर इसका दबाव बनाये रखा है।

परिसर बचाओ आन्दोलन

शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं को लेकर परिषद् की लड़ाई निरंतर चल रही है। महाविद्यालयों में शिक्षक पढ़ाए छात्र पढ़े को साकार करने हेतु परिषद् ने 'परिसर बचाओ' का अभियान 1991 में प्रारंभ किया। महाविद्यालयों में कक्षा, वाचनालय, प्रयोगशाला से लेकर पीने का पानी, खेल सामग्री जैसी विभिन्न व्यवस्थाओं तथा शिक्षकों की कमी आदि विषयों के समाधान हेतु यह एक व्यापक अभियान था। सरकार अपनी भूमिका से पीछे न हट पाये, तथा उच्च शिक्षा में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों, जैसे विषयों को केवल छात्रों का नहीं पूरे शिक्षा जगत का समर्थन प्राप्त हुआ। परिषद् की परिसर बचाओ अभियानों में परिसरों में सैकड़ों तथा रैलीयों में हजारों छात्रों ने भाग लिया। इस आन्दोलन के कारण परिसरों का वातावरण बदलने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है–

- परिषद द्वारा परिसरों में 15 अगस्त (स्वाधीनता दिवस) को ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाया ।
- महाविद्यालय परिसरों में Day Culture बदलने का प्रयास ।
- स्वामी विवेकानंद जयंती, रक्तदान, वृक्षारोपण, समान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का परिसर में आयोजन ।
- राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी. में छात्रों को सक्रीयता से भाग लेने हेतु प्रेरित करना।
- परिसरों में मूल्य शिक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा, स्वदेशी जैसे राष्ट्रीय मुद्दों पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियां प्रारम्भ होने से परिसर संस्कृति में बदलाव आता दिखाई दे रहा है ।

शिक्षा की अवधारणा

मैकाले तथा मार्क्स द्वारा प्रेरित शिक्षा पद्धति जो कालबाह्य भी है तथा हमारे देश के अनुकूल भी नहीं है, इसलिए इसे बदलकर भारत केन्द्रित बनाने पर परिषद ने हमेशा जोर दिया।

परिषद् समूचे शिक्षा परिवर्तन के लिए हमेशा संघर्षरत रही। परिषद का यह मानना है कि हमारी नई पीढ़ी को देश के गौरवपूर्ण इतिहास की स्पष्ट पहचान होना आवश्यक है। भारत को एक आधुनिक, परंतु अपनी विशिष्ट पहचान को संजोते हुए महान देश बनाने का सपना हमारी नई पीढ़ीयां देखेंगी। शिक्षा जो केवल कैरियर नहीं, तो आम देशवासियों के लिए कुछ करने का संकल्प भी देगी, हमारे लिए आवश्यकता है। शिक्षा जीवन के लिये जीवन वतन के लिये यह सोच आम छात्र की बने।

हमारी पाठ्यपुस्तकों में जब भी हमारे महापुरूषों के अपमान की बात आयी परिषद् ने उसका विरोध किया। शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु नियमित रुप से अद्यतन हो यह भी परिषद् का आग्रह रहा है। बिहार में आदर्श महाविद्यालय का अभियान चलाकर परिषद ने जिले में कम से कम एक ऐसा महाविद्यालय बनाने का प्रयास चलाया ताकि परिवर्तन की पहल हो।

छात्रसंघ

यही कारण है कि परिषद् ने हमेशा विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय की निर्णय प्रक्रिया में छात्रों के सहभाग की वकालत की। छात्रों के नये विचार परिवर्तन ला सकते हैं, उन्हें पूरा करने में वह एक शक्ति के रुप में दबाव बना सकते हैं तथा उसके लिए संघर्ष करने का जोश भी उनमें है। छात्रसंघ उसका लोकतांत्रिक स्वरूप है। छात्रसंघ की हमेशा से आग्रही विद्यार्थी परिषद ने इसे लागू करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। छात्रसंघ के माध्यम से विद्यार्थी हित के काफी कार्य जैसे छात्रों की समस्याएँ, कई प्रकार की गतिविधियाँ विश्वविद्यालय में सुधार हेतु प्रयास एवं अपने परिसर को सर्वोत्तम बनाने हेतु छात्रों को सहभागी करना आदि किये हैं।

छात्रसंघों को अधिक लोकतांत्रिक, पारदर्शी निरपेक्ष एवं बुराईयों से मुक्त रखने हेतु परिवर्तनों के लिए परिषद् प्रयासरत रही।

परिषद के प्रयासों के चलते ही उच्चतम न्यायालय ने लिंगदोह कमेटी बनायी, परिषद् के ही सुझाव थे कि छात्रसंघ में उम्र की मर्यादा जैसे कुछ मापदंड लागू करना जरुरी है। परिणामवश लिंगदोह समिति ने सुधारों के साथ छात्रसंघों की आवश्यकता का अपनी सिफारिशों में प्रतिपादन किया।

पश्चिम के अंधानुकरण का विरोध

नई पीढ़ी में हमेशा नयी बातों का आकर्षण होता है, तथा वह नयी बात को अनुभव करना चाहती है परंतु पुराने अनुभव को समझना जरुरी है और इसी को शिक्षा कहा जाता है। संवाद / संपर्क के क्षेत्र में क्रांति से दुनिया भर की अच्छी एवं बुरी दोनों बातों का आवागमन काफी मुक्त हुआ है। west is always best and east is always waste ऐसा सोचना गलत होगा।

समाज में महिलाओं के प्रति अत्याचार, युवाओं द्वारा गुनाहों में वृद्धि, पढ़े-लिखे युवा दम्पत्ति में विवाह विच्छेद का बढ़ता प्रतिशत जैसी कई बातों ने समाज की चिंता बढायी है। परिषद ने छात्रों के सामने स्पष्ट रूप से हमेशा यह रखने का प्रयास किया कि पश्चिम के जीवन में भी कैसे सामाजिक प्रश्न उत्पन्न हो गये है।

बात पश्चिम की हो या पूर्व की अपने अनुभव व विवेक के आधार पर सोचना चाहिए यह विचार परिषद ने स्पष्ट रुप से रखा। प्रेम हमेशा पवित्र है, उसका कौन विरोध करेगा। विरोध तो अश्लीलता, अनैतिकता तथा रिश्तों को काफी हलके व तात्कालिक स्वरूप में व्यक्त करने का है। बाजारु ताकतों ने प्रेम को भी अपना व्यवसाय बनाकर वेलेंटाईन डे के स्वरूप में प्रकट किया, परिषद ने अपना जागरण कार्य आग्रह पूर्वक जारी रखा परन्तु निर्णय छात्रों के विवेक पर ही छोड़ा। दूसरी तरफ महाविद्यालय प्रशासन छात्रों की अनुशासनहीनता का बहाना बनाकर पाठ्योत्तर गतिविधि जिसमें छात्रों की विभिन्न प्रतिभाएँ जैसे नृत्य, संगीत, साहित्य खेलकूद, साहित्यिक उपक्रम आदि को टालता रहा हैं। विद्यार्थी परिषद ने इन सकारात्मक

रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय प्रशासन पर यह दबाव बनाया कि छात्रों कों ऐसे अवसर मिलने ही चाहिए।

राष्ट्रीय मुद्दे

परिसरों में छात्रों को अपने कॅरियर की चिंता करने की साथ ही साथ राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान भाव को लेकर अपने देशवासियों के लिए आत्मीयता से उनके दु:ख कष्ट दूर करने के लिए अपनी प्रतिभा तथा शक्ति का उपयोग करने की इच्छा तैयार होना नितांत आवश्यक है। इस भाव का जागरण विद्यार्थी परिषद ने छात्रों में पैदा करने का प्रयास किया है।

परिषद् ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों पर इतने वर्षों में जो जागरण अभियान, आंदोलन एवं कार्यक्रम चलाए उसका काफी प्रभाव छात्रों की लगातार आने वाली पीढ़ीयों पर हो रहा है तथा देशभक्ति का भाव लेकर समाज के लिए कुछ करने का संकल्प लेकर हजारों छात्रों की कई पीढ़ियाँ परिसरों से बाहर निकली है।

परिषद् ने जब कश्मीर के पीड़ित छात्रों को 1990 में देश के परिसरों में दौरा कराया, तो छात्रों ने उस पीड़ा को दिल से समझा व सक्रियता दिखायी, 11 सितम्बर 1990 के 'चलो कश्मीर' आंदोलन में भी छात्रों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। ये छात्र परिसर से तो निकल गये लेकिन अपने पूरे जीवन के लिए देश की एकात्मता के लिए संकल्पबद्ध हो गये।

असम में घुसपैठ के मामले को लेकर 70 के दशक में छात्र आंदोलन प्रारंभ हुआ, असम की समस्या आसू (ऑल असम स्टूडंड यूनियन) की या केवल असम की नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश की है यह विचार परिषद् ने रखा। असम बचाओ देश बचाओ का नारा लगाकर असम के छात्र नेताओं का देशभर के महाविद्यालय परिसरों में विद्यार्थी परिषद ने भ्रमण कराया तो अपने ही उम्र के असम के छात्रों की यह सक्रीयता देखकर एवं घुसपैठ की गंभीरता को भाँपकर छात्रों ने इस आंदोलन को देशव्यापी बना दिया। परिषद् के नेतृत्व में सेंकड़ों छात्रों ने 2 अक्टूबर 1983 को अनेक बाधाओं के बावजूद गुवाहाटी के जजेस फील्ड पर जाकर प्रर्दशन किया।

चलो चिकन नेक

परिषद् 1983 से लगातार बांग्लादेशी घुसपैठ के विरोध में जागरण एवं आंदोलन चलाती रही। हाल ही में 2007 के प्रारंभ में परिषद् द्वारा बांग्लादेश की सीमा का सघन सर्वे कराया गया। सर्वे में कई तथ्य ऐसे उजागर हुये जिन्हें सरकारें लगातार छिपाती रहीं तथा मुस्लिम मतदाताओं को लुभाने हेतु तथाकथित सेक्यूलर दल समझौता वादी नीति अपनाते रहे। परिषद ने संकट की गंभीरता को देश के नेतागण तथा सामान्य लोगों के सामने रखा तथा कारवाई की माँग करने हेतु देशभर में आंदोलन प्रारंभ किया सीमावर्ती चिकन नेक क्षेत्र (किशनगंज, बिहार) में 40000 से अधिक छात्रों का अखिल भारतीय स्तर का प्रदर्शन 17 दिसम्बर 2008को किया। परिषद् हमेशा ऐसे राष्ट्रीय मुद्दों पर लड़ती रही है तथा छात्रों को ऐसे विषयों के माध्यमों से देश की समस्याओं के प्रति दायित्व बोध कराती रही है।

जहाँ परिषद- वहाँ देश भक्ति

विद्यार्थी परिषद् का कार्य आज देश के दूरदराज के स्थानों पर भी फैल रहा है। परिषद् के कार्यकर्ता 'भारत माता की जय' 'वंदेमातरम्' के नारे लगाते हैं, लेकिन उनके लिए यह केवल नारे नहीं बल्कि जीवननिष्ठा है। यही कारण है कि जहाँ परिषद् का कार्य पहुँचता है वहाँ राष्ट्रीयता प्रखर होती है व देशघातक ताकतों का मायाजाल समाप्त होना प्रारंभ हो जाता है।

आज अगर जम्मू कश्मीर में पुंछ, राजौरी, किश्तवाड़ (डोडा) जैसे आतंकग्रस्त क्षेत्र में परिषद् सक्रिय है तो यह वहाँ के युवाओं के लिए देश की एकात्मता के लिए संकल्पबद्ध होकर संगठित होने का अवसर है। परिषद् ने 1990 में श्रीनगर, में हुए तिरंगे के अपमान के जबाव में जहाँ हुआ तिरंगे का अपमान, वहीं करेंगे उसका सम्मान यह नारा लगाया था। कश्मीर से निर्वासित छात्र-छात्राओं को परिषद् ने देशभर के परिसरों में छात्रों के सामने अपनी बात रखने का मौका दिया तो उनकी सारी व्यथा सुनकर सारा छात्र समुदाय आक्रोषित हुआ व एकात्मता के भाव से ओतप्रोत छात्रों ने अपने आंदोलनों से देश भर में जागरण अभियान चलाया

परिषद् के कार्यकर्ता जब 1965 अरुणाचल प्रदेश गये, तो वहां पर भौतिक दूरी

व जटिलताओं के साथ ही मानसिक दूरी व परस्पर पहचान के अभावों का अनुभव किया। लेकिन परिषद कार्यकर्ताओं ने इसे सकारात्मक रुप में बदलते हेतु अंतर्राज्य छात्र जीवन दर्शन (SEIL) प्रकल्प प्रारंभ किया जिसके अंतर्गत 1966से वहाँ के छात्र देशभर में सांस्कृतिक एकता का अनुभव लेते हुए भावात्मक एकता की ओर बढ़ते रहे। देश के शेष हिस्सों से भी छात्र वहाँ जाते रहे। यह सिलसिला अभी तक जारी है। जब चीन अरुणाचल पर लगातार विवाद खड़ा कर वहाँ के युवाओं को लालच या भ्रम से भारत के विरोध में उतारना चाहता है, तब वहाँ से अगर कोई भारत विरोधी आवाज नहीं उठ पाती है तो परिषद् के नई पीढ़ियों में चल रहे कार्य की भी उसमें महत्वपूर्ण भूमिका है।

यह बात साफ है कि परिषद् का कार्य अंदमान व निकोबार या लेह में है, तो यह राष्ट्रीय एकात्मता की गारंटी है तथा प्रभावी परिषद कार्य के कारण देशघातक शक्तियों या वैसे भ्रम के लिए वहाँ कोई जगह नहीं है। आज सिक्किम के छात्रों में परिषद् कार्य का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, तो यह असंभव है कि पड़ोसी नेपाल के माओवादी उनपर प्रतिकूल प्रभाव डाल पायेंगे।

हजारों छात्रों ने परिषद के नेतृत्व में उत्तरांचल प्रांत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। छात्रों के कई आंदोलन उन दिनों परिषद के माध्यम से चलाये गये। कई परिषद कार्यकर्ताओं ने लाठियाँ,कारावास, पुलिस मामलों का सामना किया। ऐसे ही झारखंड तथा तेलंगाना आदि आंदोलनों में परिषद की प्रभावी उपस्थिति के कारण इन्हें हिंसक नक्सली या विघटनकारी शक्तियों के हाथों में जाने से बचाया जा सका।

परिषद राष्ट्रीय मुद्दों पर आंदोलनों के साथ ही सकारात्मक राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत करने के कई प्रयास करती रही है।

विवेकानंद जयंती युवा दिवस, डॉ. आंबेडकर पुण्यतिथि को 'सामाजिक समता दिवस' के रूप में प्रतिवर्ष हजारों महाविद्यालयों में परिषद मनाती हैं। इसके अलावा भगत सिंह, सावरकर चंद्रशेखर आजाद जैसे कई महापुरूषों के विचारों पर साहित्य बनाकर छात्रों में उनका प्रचार तथा विभिन्न कायक्रमों, स्पद्धाओं का आयोजन भी परिषद कार्य का हिस्सा है ।

स्वाधीनता संग्राम 1857 की महान स्मृतियों के 150 वर्ष पूर्ती पर परिषद ने प्रचुर मात्रा में साहित्य बनाकर देशभर में कई प्रकार के कार्यक्रम किये। वंदेमातरम् की शताब्दी के निमित्त सैकडों महाविद्यालयों में स्वाधीनता की गौरवपूर्ण गाथाओं को पहुंचाया तथा सामूहिक वंदेमातरम गायन के भव्य कार्यक्रम आयोजित किए।

परिषद ने राष्ट्रीय स्वाभिमान के कई विषयों पर जागरण व संघर्ष के माध्यम से कई पीढ़ियों को इस देश के स्वाभिमान से जोड़ने का अमूल्य कार्य अनवरत जारी रखा है।

3

कार्यकर्ता निर्माणः–

विगत 60 वर्षों में विद्यार्थी परिषद् नं समाज में अपनी एक पहचान और छबि वनाई है। विद्यार्थी परिषद् यानि चरित्रवान, विवेकपूर्ण और देश भक्त युवाओं का संगठन है। अभाविप कायकर्ता आधारित जन संगठन है। कार्यकर्ता ही संगठन का आधार है इसलिए अपनी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से छात्रों का व्यक्तित्व विकास करते हुये कार्यकर्ता बनाने की प्रक्रिया निरन्तर चलती है। ''छात्र जैसा है वैसा लाना है और जैसा चाहिए वैसा उसको बनाना है''।

छात्रों के जीवन में मुल्यों की स्थापना हेतु अभाविप के माध्यम से प्रयत्न चलता रहता है। जैसे आत्मीय संबधों के आधार एक परिवारिक वातावरण, एक दूसरे की सुख दुख में मदद करना, समाज के प्रत्यक्ष दर्शन के माध्यम से संवेदनाओं को जागृत करना, प्राकृतिक आपदा के समय सेवा कार्य करना, सेवा प्रकल्प जैसे– निशुल्क कोंचिग, बुक बैंक, रक्तदान, चिकित्सा सहायता, ग्रीष्मकालीन रोजगार केन्द्र, वाचनालय, चलाकर विद्यार्थियों की मदद करना। समाज में प्रमाणिकता व अनामिक भाव से कार्य करना, समय का पालन करना, अनुशासन मे रहना, जीवन मे सादगी रहना और अध्ययनशीलता जैसे आवश्यक तत्व परिषद् मे कार्य करते समय स्वाभिक रूप से छात्र में आ जाते हैं और वह छात्र–देश समाज के कार्य के लिए स्वयं प्रेरित हो जाता है। कार्यकर्त्ता विकास और निर्माण में परिषद् की कार्यपद्वति का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

- Team concept ,तथा Team spirit यह शब्द नही हैं परिषद् कार्यकर्ता एक दूसरे के प्रति समझ, समन्वय, संवाद, आत्मीयभाव से कार्य करने वाली टोली (Team) की तरह कार्य करते है।
- पूर्व योजना–पूर्ण योजना (Planning in Advance- Planning in Detail) के माध्यम से किसी भी कार्य को ठीक प्रकार से करने का स्वभाव बनता है।
- समाज व देश का कार्य यह ईश्वरीय कार्य है। इसलिए आध्यात्मिकता के भाव से कार्य करते हैं।

60 वर्षों में विद्यार्थी परिषद् ने इसी प्रकार से ऐसे हजारों कार्यकर्ताओं को राष्ट्रकार्य मे जोडने का कार्य किया है। अनेकों विद्यार्थियों को आत्म विश्वास प्रदान किया जिससे उन्हें लगा कि वो भी देश समाज के लिए कुछ कर सकते हैं। जैसे–

- जो कार्यकर्ता बोलने में झिझकता था उसे विभिन्न कार्यक्रमों में संचालन का काम देकर बोलने के लिए प्रवृत किया, आज वह एक अच्छे वकील के रूप में न्यायलय में बहस करता है।
- जो कार्यकर्ता प्रबंधक के रूप में सबको चाय बनाकर देता था वह आज एक बड़े संगठन का अध्यक्ष है।
- जो छात्रा कार्यकर्ता अधिवेशन जैसे कार्यक्रमों में कार्यालय पर बैठती थी और मंच की सज्जा करती थी वह आज एक महाविद्यालय में प्राचार्य है।
- जो कार्यकर्ता कार्यालय मे बैठकर प्रैस नोट लिखता था वह आज भारत का एक बड़ा पत्रकार है।
- जो कार्यकर्ता कार्यक्रमों में यातायात व्यवस्था देखता था वह आज बड़ा उद्योगपति बन गया है।

सामाजिक कार्य की प्रेरणा–

कुछ वर्षो तक परिषद् मे काम करने के बाद जब यह कार्यकर्ता जिसे समाज कार्य की शिक्षा–दीक्षा मिली है वह समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर सक्रिय भूमिका निभाता हुआ दिखाई देता है। विगत 60 वर्षों में विद्यार्थी परिषद् ने ऐसे हजारों कार्यकर्ताओं को जीवन दृष्टि देने में सफलता पाई है। उदाहरणार्थ

- देश के कई विश्वविद्यालयों में कुलपति, कुलसचिव, डीन, सिन्डीकेट सदस्य, परीक्षा नियंत्रक, विभागाध्यक्ष के रूप में विद्यार्थी परिषद् के पूर्व कार्यकर्ता अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहें हैं।
- प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मिडिया मे सम्पादक, मार्गदर्शक, कार्यक्रम अधिकारी, समाचार वाचक एवं पत्रकार के रूप मे कई कार्यकर्ता आज कार्यरत हैं।
- राजनैतिक क्षेत्र में अनेकों पूर्व कार्यकर्ता महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुए राष्ट्रवादी विचार को मजबूत करने मे अपना योगदान दे रहें हैं।
- वर्तमान समय में देश में NGO की भूमिका अत्यन्त महत्व की बनती जा रही है। दूर–सुदुर क्षेत्रों में वनवासी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में परिषद् के ये कार्यकर्ता अपने NGO के माध्यम से सेवा कार्य में लगे हैं।
- कम्पयूटर, बैकिंग, चिकित्सा, कृषि, बीमा, कम्पनी, न्यायालय, स्कूल, कालेज, उद्योग सेना, अनुसंधान, समाज सेवा एवं विविध क्षेत्रों में विद्यार्थी परिषद् के कायकर्ता अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अपने क्षेत्र को आलोकित कर रहें हैं।

'दसो दिशाओं मे जायें–दल बादल से छा जायें'' इस पक्ति को विद्यार्थी परिषद् के

इन कार्यकर्ताओं ने सार्थक किया है। समाज के सभी क्षेत्रों में अभाविप का यह कार्यकर्ता महत्व के स्थान पर अपनी भूमिका का निर्वाह करता हुआ आज दिखाई दे रहा है।

व्यक्ति परिवर्तन, कार्यकर्ता निर्माण समाज एवं राष्ट्र सेवा हमारा साध्य है। एक सामान्य छात्र कार्यकर्ता बनकर व्यापक उद्देश्य के लिए विद्यार्थी परिषद् में कार्य करते हैं। कार्यकर्ता साधन हैं और समाज का कार्य साध्य है। समाज का कार्य करते–करते कैरियर बनाने में कोई कठिनाई नहीं आती है। यह एक दूसरे के पूरक एवं अनुकूल भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई कार्यकर्ता एक अच्छे वकील के रूप में कार्य करता तो उसके उपरान्त वह अन्याय को रोकने दोषियों को सजा दिलवाने में प्रभावी रूप से कार्य कर सकता है यदि कोई पत्रकार बनता है तो व अपनी लेखनी से समाज परिर्वतन का वाहक बन सकता है। विद्यार्थी परिषद् एक अच्छे कैरियर और समाज सेवा का माध्यम आज के युवाओं के लिए बन गयी है।

विद्यार्थी परिषद् की उपलब्धियां–

- देश को एक ऐसा छात्र संगठन दिया है जो 60 वर्ष की साधना में तपकर तैयार हुआ है। यह राष्ट्रव्यापी संगठन देश के सभी प्रान्तों व विश्वविद्यालयों में कार्य कर रहा है।
- विद्यार्थी परिषद् की देशव्यापी उपस्थिति ने धीरे–धीरे छात्रों को हिंसक आंदोलन के स्थान पर लोकतन्त्र में आस्था रखते हुए स्वयं की रचनात्मक पहल के लिए प्रेरित किया।
- विद्यार्थी परिषद् के कार्य के कारण परिसरो से रैंगिग, गुण्डागर्दी जैसी बातों का प्रभाव क्रमशः कम हुआ है।
- परिषद् ने परिसरों मे सामाजिक, सदभाव एवं परस्पर सहयोग का वातावरण बनाया है एवं राजनैतिक प्रभावों से परिसरों को मुक्त रखने की ओर प्रयास किया।
- परिषद् ने समरसता भाव के साथ विघटनकारी, जातिवादी शक्तियों को कम से कम शैक्षिक परिसरों के बाहर काफी हद तक रोक कर रखा है।
- समाज मे व्याप्त दहेज, लिंगभेद, स्त्री–भ्रूण हत्या जैसी कई कुप्रथाओं का विरोध तो किया ही साथ में जागरण अभियान भी चलाये और परिषद् कार्य में छात्राओं को बडी संख्या में महत्वपूर्ण दायित्वों पर सहभागी किया है।
- छात्रों मे समाज के प्रति दायित्व का भाव जागृत करते हुये उन्हें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व देने योग्य बनाया है।
- विद्यार्थी परिषद् ने सत्ताधरियों के आगे पीछे घूमने की सामान्य प्रवृति के विपरित छात्रों को लोकहित मे संघर्ष करने की मानसिकता प्रदान कर राजनीतिज्ञों पर अंकुश का काम किया है।
- परिषद् मे महाविद्यालय इकाई से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक पदाधिकारियों के चुनाव तथा दायित्व परिर्वतन सामान्य पद्वति से व बिना विवाद के सम्पन्न होते है। समाज मे **पद नहीं दायित्व** की भावना को विकसित करके दिखाया है।

- विद्यार्थी परिषद् ने निधि संग्रह, खर्च तथा हिसाब मे सुचिता की परम्परा से समाज का विश्वास अर्जित किया है।
- राष्ट्रीय सम्पत्ति यह अपनी है इस मानसिकता के साथ परिषद् के देशव्यापी, प्रान्तीय कार्यक्रम आंदोलन मे आने वाले छात्र–छात्राएं अपना टिकट खरीद कर यात्रा करते हैं।
- शिक्षा मे भ्रष्टाचार पर अंकुश एवं सत्ता मे ऊंचे स्थानों पर बैठे हुये भ्रष्ट व्यक्तियों के विरूद्ध सतत संघर्ष का कार्य परिषद् ने किया है।
- शिक्षा क्षेत्र के निजीकरण एवं व्यापारीकरण पर विद्यार्थी परिषद् ने अंकुश लगाया है।
- नक्सली हिंसा व आंतकवाद से प्रभावित क्षेत्रों में राष्ट्रवादी कार्यकताओं की टोली के माध्यम से उन्हें रोकने व वहां से बाहर खदेड़ने का प्रभावी कार्य किया है।
- देश में प्राकृतिक आपदाओं के समय हजारों छात्रों को सेवा कार्य हेतु प्रेरित करने का कार्य परिषद् ने किया है।

महाभारत युद्ध के दौरान जब भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाया तो अर्जुन चौक पड़े उनको लगा कि में जिस कृष्ण को प्रतिदिन सखा के रूप में देखता था उसके साथ खेलता था उस कृष्ण का इतना विराट रूप में कभी जान ही नहीं पाया। वस्तुतः अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का स्वरूप भी कुछ ऐसा ही है। विद्यार्थी परिषद् को बहुत से लोग केवल छात्रों की समस्याओं के लिए आंदोलन करने वाल संगठन मानते हैं। कुछ लोग युवाओं का संगठन, राजकीय पक्ष से जुडा संगठन, रैलीयां निकालने वाला तथा आंतकवाद के विरोध में कार्य करने वाला संगठन मानते हैं। विद्यार्थी परिषद् के बहुआयामी चरित्र को कम लोग जानते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में समाज एवं राष्ट्रविघातक शक्तियों, निरकुंश होती राज व्यवस्था, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार, छद्मधर्मनिरपेक्षता, समाज में बढ़ती अपसंस्कृति के विरूद्वएक सघन लोक सग्रह अभियान यह समय की अवश्यकता है। लोक शिक्षा, लोक सेवा एवं लोक सघर्ष के द्वारा विद्यार्थी समुदाय परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज करने में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। विद्यार्थी परिषद् ने अपनी विकास यात्रा में सबको सम्मिलित करते हुये आम छात्र को केन्द्र में रखा है। परिषद् ने सामान्य छात्र को जो आत्मविश्वास दिया है कि वो भी राष्ट्रसेवा के कार्य में अपना योगदान दे सकता है विद्यार्थी परिषद् का यह विराट स्वरूप हमारे सामने आया है। अभी परिषद् के कार्य को चलते हुये 60 वर्ष पूर्ण हुये हैं। विद्यार्थी परिषद् की यह कहानी आगे बढ़ती ही रहेगी। हम कह सकते हैं कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् नाम का यह संगठन स्वाधीन भारत के छात्र आंदोलन का एक स्वर्ण पृष्ठ है।